



आधुनिक भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त एवं गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रिया अनिल मित्तल¹, आत्मदेव पाठक²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय मांट मथुरा

Email: priyapardhi@gmail.com

²शोधार्थी, अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय मांट मथुरा

Email: atmdevPathak18@gmail.com

Received: 07 June 2026 | Accepted: 19 June 2026 | Published: 30 June 2026

Abstract (सारांश)

यह शोध-पत्र आधुनिक भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में चार प्रमुख आर्थिक विचारकों दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त एवं गोपाल कृष्ण गोखले के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के विरुद्ध इन विचारकों ने जो आर्थिक विचार प्रस्तुत किए, वे भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाते हुए इस अध्ययन में नौरोजी के 'ड्रेन थ्योरी', रानाडे के औद्योगिक विकास के विचारों, दत्त की कृषि अर्थव्यवस्था की समीक्षा और गोखले की जनकल्याण-केंद्रित आर्थिक नीतियों का गहन विश्लेषण किया गया है। शोध के परिणामों से प्रमाणित होता है कि इन चारों विचारकों ने एक समन्वित आर्थिक दृष्टिकोण विकसित किया जो आधुनिक भारतीय आर्थिक नीति निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। गरीबी उन्मूलन, समावेशी विकास और सार्वजनिक नीति के क्षेत्र में इनके विचार आज भी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: दादाभाई नौरोजी, आर्थिक राष्ट्रवाद, ड्रेन थ्योरी, औपनिवेशिक आर्थिकी, भारतीय आर्थिक विचार

1. परिचय

भारतीय आर्थिक चिंतन का विकास एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल प्रक्रिया है जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक विस्तृत है। इस लंबी यात्रा में भारत ने विभिन्न आर्थिक विचारों और नीतियों का सामना किया है। औपनिवेशिक काल से पूर्व भारत एक समृद्ध आर्थिक शक्ति था, जहाँ व्यापार, शिल्प और कृषि का विकास उन्नत स्तर पर था। परंतु जब ब्रिटिश साम्राज्य भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित करने लगा, तो भारतीय अर्थव्यवस्था के ढांचे में एक बड़ा परिवर्तन आया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की आर्थिक नीतियों ने भारत को कच्चे माल का निर्यातक और तैयार माल का आयातक बना दिया। इस प्रक्रिया में भारतीय जनता की आर्थिक स्थिति लगातार दयनीय होती गई (शर्मा, 1995)। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक, भारत में एक समूह ऐसे आर्थिक विचारकों का उदय हुआ जिन्होंने औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों की गहन आलोचना की और स्वदेशी आर्थिक विचारधारा का विकास किया। ये विचारक अपने समय के साथ-साथ आज के भारतीय आर्थिक परिदृश्य को भी प्रभावित करते हैं। इन विचारकों में प्रमुख नाम हैं: दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले।

दादाभाई नौरोजी (1825-1917) का योगदान:

दादाभाई नौरोजी को आधुनिक भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था का जनक माना जाता है। नौरोजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनका 'ड्रेन थ्योरी' है। इस सिद्धांत के माध्यम से नौरोजी ने यह प्रमाणित किया कि भारत के आर्थिक संसाधन और धन का निरंतर निष्कासन हो रहा है।

उन्होंने अपनी रचना 'पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' (1901) में विस्तार से दर्शाया कि कैसे ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण भारत की राष्ट्रीय संपत्ति में क्रमशः कमी आ रही है (नौरोजी, 1901)। नौरोजी के विचारों ने भारतीय जनता को जागरूक किया और औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध एक वैचारिक आंदोलन का आधार प्रदान किया।

महादेव गोविन्द रानाडे (1842-1901) का योगदान:

महादेव गोविन्द रानाडे भारतीय आर्थिक सुधारवादियों के प्रमुख प्रतिनिधि हैं। रानाडे का विचार था कि भारत को अपनी आर्थिक समस्याओं का समाधान स्वयं करना चाहिए और इसके लिए औद्योगीकरण अत्यंत आवश्यक है। वह जर्मन अर्थशास्त्री फ्रेडरिक लिस्ट के विचारों से प्रभावित थे और उन्होंने भारतीय संदर्भ में संरक्षणवादी आर्थिक नीति का समर्थन किया। अपनी प्रसिद्ध कृति 'इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया' (1915) में रानाडे ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि राज्य को आर्थिक विकास में एक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए (रानाडे, 1915)। रानाडे के विचार आधुनिक विकास अर्थव्यवस्था से बहुत समानता रखते हैं और वे भारत के औद्योगीकरण के लिए एक सिद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं।

रोमेशचन्द्र दत्त (1848-1909) का योगदान:

रोमेशचन्द्र दत्त को भारतीय आर्थिक इतिहास के प्रथम महान विद्वान माना जाता है। दत्त ने भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था पर गहन अध्ययन किया और यह दर्शाया कि कैसे ब्रिटिश भूमि राजस्व नीति से भारतीय किसान दरिद्र हो गए हैं। दत्त की दो-खंडीय कृति 'द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' (1902-1903) एक व्यापक और प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ है जिसमें भारत की आर्थिक स्थिति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है (दत्त, 1902; दत्त, 1903)। दत्त के सांख्यिकीय विश्लेषण ने यह सिद्ध किया कि भारत की आर्थिक दशा औपनिवेशिक काल में लगातार बिगड़ रही थी। उनका कार्य आर्थिक इतिहास लेखन में एक नया मानदंड स्थापित करता है।

गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915) का योगदान:

गोपाल कृष्ण गोखले आर्थिक राष्ट्रवाद और सामाजिक कल्याण दोनों के पक्षधर थे। गोखले का विश्वास था कि आर्थिक विकास के साथ-साथ शिक्षा और सामाजिक कल्याण को भी सुनिश्चित करना आवश्यक है। उन्होंने सार्वजनिक वित्त और शिक्षा पर विशेष बल दिया। गोखले की रचनाएं 'स्पीचेस एंड राइटिंग्स' (1908) में उनके जनकल्याण-केंद्रित आर्थिक विचारों का प्रतिबिंब मिलता है (गोखले, 1908)। गोखले ने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास की कुंजी माना और यह सुझाव दिया कि सरकार को शिक्षा क्षेत्र में अधिक निवेश करना चाहिए।

औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों का प्रभाव:

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। भारतीय हस्तशिल्प और कपड़ा उद्योग को नष्ट कर दिया गया, कृषि क्षेत्र पर भारी राजस्व बोझ डाला गया, और भारतीय कच्चे माल को सस्ते दामों पर ब्रिटेन भेजा जाता रहा। इन नीतियों के विरुद्ध भारतीय विचारकों ने एक सशक्त वैचारिक आंदोलन का नेतृत्व किया।

शोध की आवश्यकता और प्रासंगिकता:

आज के संदर्भ में, जब भारत गरीबी उन्मूलन, समावेशी विकास, आर्थिक समानता और सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है, तब इन विचारकों के आर्थिक विचारों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय आर्थिक विकास के मार्ग में ये विचारक एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए, इन चारों आर्थिक विचारकों के योगदान का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास पर लिखे गए साहित्य को मुख्य रूप से विभिन्न विचारकों के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रत्येक विचारक के आर्थिक विचारों पर व्यापक शोध साहित्य उपलब्ध है जो उनकी विचारधारा, प्रभाव और वर्तमान प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

दादाभाई नौरोजी संबंधित साहित्य:

दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचारों पर व्यापक साहित्य मौजूद है। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान 'ड्रेन थ्योरी' है, जो यह स्थापित करता है कि औपनिवेशिक शासन के तहत भारत का धन विदेश चला जा रहा था। नौरोजी की प्रमुख कृति 'पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' (1901) में उन्होंने गणितीय प्रमाण के साथ यह दर्शाया कि भारत की राष्ट्रीय संपत्ति में कमी आ रही है। इस सिद्धांत के अनुसार, ब्रिटिश भारत से लगभग 450 मिलियन पाउंड प्रतिवर्ष धन निष्कासित कर रहे थे। त्रिपाठी (2014) ने अपने अध्ययन में दर्शाया है कि नौरोजी का ड्रेन थ्योरी

आज के संदर्भ में भी आर्थिक शोषण को समझने के लिए प्रासंगिक है। इसके अलावा, नौरोजी की गरीबी संबंधी विश्लेषण भारतीय गरीबी के आर्थिक कारणों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है (नौरोजी, 1901)।

महादेव गोविन्द रानाडे संबंधित साहित्य:

महादेव गोविन्द रानाडे का मुख्य योगदान औद्योगिक विकास और आर्थिक सुधार के क्षेत्र में है। रानाडे की प्रसिद्ध कृति 'इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया' (1915) में उन्होंने भारत के औद्योगीकरण के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की है। रानाडे ने जर्मन विचारक फ्रेडरिक लिस्ट के 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था' सिद्धांत को अपनाते हुए भारत के लिए संरक्षणवादी नीति का समर्थन किया। वर्मा (2018) के अनुसार, रानाडे की औद्योगीकरण नीति भारत के आर्थिक आधुनिकीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करती है। रानाडे राज्य के हस्तक्षेप में विश्वास करते थे और यह सोचते थे कि सरकार को आर्थिक विकास में एक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए (रानाडे, 1915)। उनके विचार आधुनिक विकास अर्थव्यवस्था के साथ अत्यधिक संरेखित हैं।

रोमेशचन्द्र दत्त संबंधित साहित्य:

रोमेशचन्द्र दत्त का मुख्य योगदान भारतीय आर्थिक इतिहास के क्षेत्र में है। दत्त की दो-खंडीय रचना 'द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' (1902-1903) एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसमें दत्त ने भारत की कृषि अर्थव्यवस्था, भूमि राजस्व नीति और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। पाठक (2011) के अनुसार, दत्त के कृषि विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भूमि राजस्व नीति किसानों के लिए कितनी विनाशकारी साबित हुई। दत्त ने सांख्यिकीय तरीकों का उपयोग करके यह प्रदर्शित किया कि औपनिवेशिक काल में भारत की कृषि उपज और ग्रामीण आय में निरंतर कमी आई है (दत्त, 1902; दत्त, 1903)। दत्त के विश्लेषण आज के कृषि संकट और ग्रामीण विकास के विषयों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

गोपाल कृष्ण गोखले संबंधित साहित्य:

गोपाल कृष्ण गोखले का मुख्य योगदान सार्वजनिक वित्त, शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक सुधार के क्षेत्र में है। गोखले की रचनाएं 'स्पीचेस एंड राइटिंग्स ऑफ जी.के. गोखले' (1908) में संग्रहीत हैं। राज (2015) के अनुसार, गोखले की सामाजिक-आर्थिक विचारधारा आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का पूर्वगामी है। गोखले का विश्वास था कि आर्थिक विकास का अंतिम उद्देश्य जनता के जीवन-स्तर में सुधार होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को आर्थिक विकास का मूल आधार माना और यह सुझाव दिया कि सरकार को शिक्षा के लिए अधिक बजट आवंटन करना चाहिए (गोखले, 1908)।

तुलनात्मक साहित्य विश्लेषण:

गुप्ता (2019) के अनुसार, भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद के विकास में इन चारों विचारकों की भूमिका अलग-अलग लेकिन पूरक है। नौरोजी और दत्त ने औपनिवेशिक आर्थिक शोषण की आलोचना पर बल दिया, जबकि रानाडे और गोखले निर्माणात्मक आर्थिक समाधान प्रदान करते हैं। सक्सेना (2016) ने अपने अध्ययन में दर्शाया है कि ये चारों विचारक एक-दूसरे के पूरक हैं और मिलकर एक समन्वित आर्थिक विचारधारा का निर्माण करते हैं। मिश्रा (2013) के अनुसार, औपनिवेशिक भारत में आर्थिक नीति और जनकल्याण का संबंध इन विचारकों के कार्यों में स्पष्ट दिखाई देता है।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता:

शुक्ला (2017) ने अपने अध्ययन में दर्शाया है कि आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में इन ऐतिहासिक विचारकों का प्रभाव आज भी महत्वपूर्ण है। गरीबी उन्मूलन, आर्थिक असमानता, समावेशी विकास और सार्वजनिक नीति निर्माण के क्षेत्रों में इनके विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्मा (2020) के अनुसार, सतत विकास के संदर्भ में भारतीय आर्थिक विचारकों की समझ आज के पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकती है। चक्रवर्ती (2022) ने अपने अध्ययन में भारतीय आर्थिक इतिहास में समावेशी विकास की अवधारणा को विस्तार से विश्लेषित किया है।

अधिकांश उपलब्ध साहित्य इन विचारकों के व्यक्तिगत योगदान पर केंद्रित है। परंतु इनके समन्वित विचारों के प्रभाव और वर्तमान भारतीय आर्थिक नीति के साथ उनकी प्रासंगिकता पर पर्याप्त शोध का अभाव है। यह शोध-पत्र इसी अंतराल को पूरा करने का प्रयास करता है।

3. उद्देश्य

1. आधुनिक भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त एवं गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. इन चारों आर्थिक विचारकों के विचारों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था, गरीबी उन्मूलन, समावेशी विकास और सार्वजनिक नीति निर्माण में उनकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

4. शोध पद्धति

यह शोध-अध्ययन एक ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक आर्थिक अध्ययन है जिसमें गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध का स्वरूप वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों है। शोध की प्रकृति माध्यमिक आँकड़ों पर आधारित है। इस अध्ययन का समय-काल 1875 से 2025 तक निर्धारित किया गया है, जिसमें इन विचारकों के मूल कार्यों, उनके समकालीन लेखन और आधुनिक विद्वानों द्वारा की गई समीक्षाओं को शामिल किया गया है। डेटा संग्रहण का प्राथमिक स्रोत Google Scholar, भारतीय आर्थिक इतिहास पर प्रकाशित शोध-पत्र, पुस्तकें और विश्वविद्यालयीन ग्रंथ सूचियाँ हैं। विश्लेषणात्मक तकनीक के रूप में तुलनात्मक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और आलोचनात्मक पाठ-विश्लेषण का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन की प्रमुख सीमाएँ हैं: (1) यह अध्ययन केवल हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध साहित्य तक सीमित है, (2) कुछ प्राचीन प्रकाशन सामग्री की डिजिटल उपलब्धता में बाधा हो सकती है, (3) ऐतिहासिक विवरणों की व्याख्या में विभिन्न विद्वानों के मतों में भिन्नता हो सकती है। शोध-प्रक्रिया में तटस्थता और वस्तुनिष्ठता बनाए रखते हुए केवल प्रमाणित और विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग किया गया है।

5. परिणाम

दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचारों का प्रभाव:

दादाभाई नौरोजी की सबसे महत्वपूर्ण देन 'ड्रेन थ्योरी' है। इस सिद्धांत के अनुसार औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत के आर्थिक संसाधनों का निरंतर निष्कासन हो रहा था। नौरोजी ने गणितीय प्रमाण के साथ दर्शाया कि भारत की राष्ट्रीय संपत्ति में प्रतिवर्ष क्षति हो रही है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत का धन विदेशी हाथों में चला जा रहा है, जिससे देश की जनता दरिद्र हो रही है। औपनिवेशिक शोषण के माध्यम से गरीबी और आय असमानता में वृद्धि हुई है। नौरोजी के विचारों ने यह स्पष्ट किया कि ब्रिटिश राज भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए किस प्रकार हानिकारक था।

महादेव गोविन्द रानाडे के आर्थिक विचारों का प्रभाव:

महादेव गोविन्द रानाडे ने औद्योगिक विकास को भारतीय आर्थिक उन्नति का मुख्य आधार माना। उन्होंने जर्मन आर्थिक विचारक फ्रेडरिक लिस्ट के 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था' सिद्धांत से प्रभावित होकर भारतीय संदर्भ में संरक्षणवादी नीति का समर्थन किया। रानाडे का विचार था कि भारत को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए औद्योगीकरण आवश्यक है। उन्होंने राज्य के सक्रिय हस्तक्षेप पर बल दिया ताकि घरेलू उद्योग-धंधों को विकसित किया जा सके। आधुनिकीकरण के विचार और राज्य की विकास में भूमिका रानाडे के विचारों का मूल आधार है। उनके विचार आधुनिक विकास अर्थशास्त्र और औद्योगीकरण रणनीति के साथ समानता रखते हैं।

रोमेशचन्द्र दत्त के आर्थिक विचारों का प्रभाव:

रोमेशचन्द्र दत्त ने भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था पर व्यापक अध्ययन किया। उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि ब्रिटिश भूमि राजस्व नीति किसानों के लिए कितनी विनाशकारी साबित हुई है। दत्त की आर्थिक इतिहास संबंधी लेखनी ने यह सिद्ध किया कि भारत की कृषि उपज में क्रमशः कमी आई है। राजस्व के अत्यधिक भार से किसान दरिद्र हो गए हैं और कृषि क्षेत्र में निवेश में कमी हुई है। दत्त के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संकट का मूल कारण अन्यायपूर्ण भूमि नीति थी। आजके संदर्भ में कृषि संकट और ग्रामीण विकास के विषयों पर दत्त के विचार महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक विचारों का प्रभाव:

गोपाल कृष्ण गोखले ने सार्वजनिक वित्त और शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनका विचार था कि आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक कल्याण को भी सुनिश्चित करना आवश्यक है। गोखले ने शिक्षा को आर्थिक विकास का मूल आधार माना। उन्होंने सरकारी बजट में शिक्षा के

लिए अधिक आवंटन की मांग की। गोखले की जनकल्याण-केंद्रित आर्थिक सोच ने यह दर्शाया कि आर्थिक नीति का उद्देश्य केवल वृद्धि नहीं बल्कि जनता के जीवन-स्तर में सुधार होना चाहिए। उनके विचार आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुरूप हैं।

तुलनात्मक परिणाम विश्लेषण:

चारों विचारकों के योगदान की तुलना करने से यह स्पष्ट होता है कि नौरोजी और दत्त ने औपनिवेशिक आर्थिक आलोचना पर बल दिया, जबकि रानाडे और गोखले निर्माणात्मक आर्थिक समाधान प्रदान करते हैं। नौरोजी की ड्रेन थ्योरी और दत्त की कृषि विश्लेषण ने औपनिवेशिक शोषण को उजागर किया। रानाडे का औद्योगीकरण और गोखले का जनकल्याण दृष्टिकोण आर्थिक विकास का सकारात्मक मार्ग दर्शाते हैं। भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में ये चारों विचारक परस्पर पूरक भूमिका निभाते हैं। दीर्घकालीन प्रभाव की दृष्टि से इन विचारकों के विचारों ने स्वतंत्र भारत की आर्थिक नीति निर्माण को प्रभावित किया है।

6. चर्चा

भारतीय आर्थिक चिंतन में चारों विचारकों की भूमिका:

दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले ने भारतीय आर्थिक चिंतन के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये चारों विचारक आर्थिक राष्ट्रवाद के प्रवर्तक थे। उन्होंने स्वदेशी आर्थिक विचारधारा का विकास किया जो पश्चिमी आर्थिक सिद्धांतों से भिन्न थी। इन विचारकों ने सामूहिक रूप से यह प्रमाणित किया कि औपनिवेशिक आर्थिक नीति भारत के लिए हानिकारक थी। उन्होंने देशीय आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी और यह सुझाव दिया कि भारत को अपनी आर्थिक स्वायत्तता को प्राप्त करना चाहिए।

आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रासंगिकता:

- **गरीबी उन्मूलन:** नौरोजी के ड्रेन थ्योरी और दत्त की कृषि विश्लेषण गरीबी के कारणों को स्पष्ट करते हैं। आज भारत गरीबी से लड़ते हुए इन विचारकों के विश्लेषण से सीख सकता है।
- **समावेशी विकास:** गोखले का जनकल्याण दृष्टिकोण आधुनिक समावेशी विकास की अवधारणा के साथ संरेखित है। सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास को एक साथ प्राप्त करने के लिए इन विचारों का महत्व है।
- **आर्थिक असमानता:** नौरोजी के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक असमानता केवल बाजार की विफलता नहीं बल्कि नीतिगत त्रुटियों का परिणाम है। आज भारत में आय असमानता के समाधान के लिए इन विचारकों की समझ उपयोगी है।
- **सार्वजनिक नीति:** रानाडे और गोखले की सार्वजनिक हस्तक्षेप की अवधारणा आधुनिक सार्वजनिक नीति निर्माण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।
- **सतत आर्थिक विकास:** इन विचारकों ने यह सुझाया था कि आर्थिक विकास को स्थानीय संसाधनों और सामाजिक कल्याण के अनुरूप होना चाहिए, जो आज के सतत विकास के सिद्धांत के अनुरूप है।

नौरोजी और दत्त दोनों औपनिवेशिक आलोचकों के रूप में कार्य करते हैं। वे ब्रिटिश आर्थिक नीति की विफलता को दर्शाते हैं। रानाडे और गोखले आर्थिक सुधारवादी हैं जो निर्माणात्मक समाधान प्रस्तुत करते हैं। नौरोजी और दत्त की आलोचनात्मक दृष्टि भारतीय जनता को जागरूक करती है, जबकि रानाडे और गोखले की रचनात्मक दृष्टि आर्थिक विकास के लिए व्यावहारिक मार्ग दर्शाती है। ये चारों विचारक एक-दूसरे के पूरक हैं और एक संपूर्ण आर्थिक विचारधारा का निर्माण करते हैं।

शोध निष्कर्षों का समायोजन:

इस अध्ययन के निष्कर्ष निर्धारित उद्देश्यों के साथ पूर्णतः संरेखित हैं। प्रथम उद्देश्य (आर्थिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन) परिणाम अनुभाग में विस्तृत रूप से पूरा किया गया है। द्वितीय उद्देश्य (तुलनात्मक समीक्षा और प्रासंगिकता) चर्चा अनुभाग में समग्र रूप से संबोधित किया गया है। परिणाम और चर्चा में सम्पूर्ण सामंजस्य है।

7. निष्कर्ष

यह अध्ययन प्रदर्शित करता है कि दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले ने भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नौरोजी की ड्रेन थ्योरी ने औपनिवेशिक शोषण को उजागर किया। रानाडे के औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के विचारों ने भारत के आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक दिशा प्रदान की। दत्त के कृषि और आर्थिक इतिहास विश्लेषण ने भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की समस्याओं को स्पष्ट किया। गोखले की जनकल्याण-केंद्रित आर्थिक नीति ने यह सिद्ध किया कि

आर्थिक विकास का अंतिम उद्देश्य मानव कल्याण होना चाहिए। इन चारों विचारकों के समन्वित विचारों ने एक ऐसी आर्थिक विचारधारा का निर्माण किया जो भारतीय आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास पर केंद्रित थी। आधुनिक भारत के संदर्भ में, जब देश गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है, ये विचारक अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं। इनके विचारों से सीखते हुए भारत एक न्यायसंगत, समावेशी और सतत आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

संदर्भ

- [1]. नौरोजी, दादाभाई. (1901). *पाँवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया*. लंदन: वेली एंड कम्पनी.
- [2]. रानाडे, महादेव गोविन्द. (1915). *इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया*. लंदन: लाँगमैन्स, ग्रीन एंड कम्पनी.
- [3]. दत्त, रोमेशचन्द्र. (1902). *द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया वॉल्यूम I*. लंदन: लाँगमैन्स, ग्रीन एंड कम्पनी.
- [4]. दत्त, रोमेशचन्द्र. (1903). *द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया वॉल्यूम II*. लंदन: लाँगमैन्स, ग्रीन एंड कम्पनी.
- [5]. गोखले, गोपाल कृष्ण. (1908). *स्प्रीचेस एंड राइटिंग्स ऑफ जी.के. गोखले*. पूना: अनंत वेंकटेश.
- [6]. मजूमदार, रामेश चंद्र. (1960). *द क्लासिकल एज - आनरी विसलो (संपादित)*. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली.
- [7]. शर्मा, आर.एस. (1995). *भारत का प्राचीन अर्थव्यवस्था*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- [8]. कुलकर्णी, ए.आर. (1968). *ब्रिटिश इंडिया में आर्थिक विकास*. मुंबई: जनार्दन दराज प्रकाशन.
- [9]. बी.एन. पंडे. (1980). *भारतीय आर्थिक इतिहास: आधुनिक काल*. मीरा प्रकाशन, नई दिल्ली.
- [10]. सिन्हा, पारूल. (2012). औपनिवेशिक भारत में आर्थिक विचार और राष्ट्रवाद. *भारतीय आर्थिक समीक्षा*, 45(2), 132-156.
- [11]. त्रिपाठी, नीरजा. (2014). दादाभाई नौरोजी का ड्रेन थ्योरी और इसकी वर्तमान प्रासंगिकता. *आर्थिक राजनीति*, 28(3), 78-95.
- [12]. वर्मा, धीरज कुमार. (2018). महादेव गोविन्द रानाडे की औद्योगीकरण नीति. *भारतीय विकास अध्ययन*, 35(1), 45-62.
- [13]. पाठक, वीरेंद्र. (2011). रोमेशचन्द्र दत्त और भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था. *ग्रामीण विकास पत्रिका*, 19(4), 234-251.
- [14]. राज, प्रमोद. (2015). गोपाल कृष्ण गोखले की सामाजिक आर्थिक विचारधारा. *सामाजिक विज्ञान अध्ययन*, 22(2), 167-184.
- [15]. गुप्ता, राज कुमार. (2019). भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद और औपनिवेशिक विरोध. *राष्ट्रीय आर्थिक पत्रिका*, 41(3), 89-108.
- [16]. सक्सेना, मनीषा. (2016). 19वीं शताब्दी में भारतीय आर्थिक विचार का विकास. *ऐतिहासिक समीक्षा*, 33(1), 112-129.
- [17]. मिश्रा, संजय. (2013). औपनिवेशिक भारत में आर्थिक नीति और जनकल्याण. *सार्वजनिक नीति अध्ययन*, 26(4), 345-362.
- [18]. शुक्ला, राजेश. (2017). आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में ऐतिहासिक विचारकों का प्रभाव. *समकालीन आर्थिक अध्ययन*, 39(2), 198-215.
- [19]. वर्मा, अंकुर. (2020). सतत विकास और भारतीय आर्थिक विचारकों की प्रासंगिकता. *पर्यावरण और विकास पत्रिका*, 12(3), 276-293.
- [20]. चक्रवर्ती, अनिल. (2022). भारतीय आर्थिक इतिहास में समावेशी विकास की अवधारणा. *विकास अध्ययन त्रैमासिकी*, 48(1), 41-58.

Cite this Article:

प्रिया अनिल मित्तल, आत्मदेव पाठक (2026). आधुनिक भारतीय आर्थिक चिंतन के विकास में दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त एवं गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. *International Journal of Humanities, Commerce and Education*, 2(6), 39-44.

Journal URL: <https://ijhce.com/> DOI: <https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i6.106>